[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3420

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वर्तमान समय में "रोजगार युक्त संगीत कला" उच्चशिक्षा में एक महत्वपूर्ण आयाम

डॉ. लता जैन
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष – अर्थशास्त्र
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर

भारत में संगीत परम्परा बहुत प्राचीन है। संगीत किसी भी क्षेत्र का हो, चाहे भारतीय हो अथवा पाश्चात्य, आदिकाल से ही उसका जनजीवन से संबंध रहा है। यह एक ऐसी ललित कला है जिसमें संगीतज्ञ स्वर, लय, ताल के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करता है। संगीत में सम्पूर्ण मानव जगत को आत्मविभोर करने की शक्ति होती है यह ऐसी कला है जो विश्व में सभी को प्रिय है। संसार की कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहाँ के लोग संगीत से जुड़े न हों, इसलिए भर्तृहरि ने संगीत विहीन मानव को बिना सींग और पूँछ वाले पशु के समान माना है।

आज उच्च शिक्षा में कला संकाय के रूप में संगीत को भी उतना ही स्थान दिया गया है, जितना कि अन्य विधाएँ जैसे चित्रकला, दर्शन एवं योग आदि को महत्व मिला है। लेकिन आज संगीत शिक्षण में आधुनिकता के आधार पर कुछ आंशिक परिवर्तन होना आवश्यक है। संगीत को अधिक रूचिकर बनाने के लिए उच्च–शिक्षा विभाग द्वारा कला संकाय–शिक्षा को ओर अधिक प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कई प्रकार के पाठ्यक्रम जैसे – पुनश्चर्या एवं दिशा दर्शन के कार्यक्रम विष्वविद्यालयों के माध्यम से शुरू किये जाते हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षकों को विशेष अध्ययन के साथ तैयार किया जाता है। लेकिन केवल ये औपचारिकता न रह जाये, इसलिए आयोग द्वारा शिक्षकों को नए आयाम एवं उच्च शिक्षा व्यवस्था अधिक रूचिकर बनाना चाहिए। ताकि ये सभी विषय भविष्य के लिए सुरक्षित रह सकें।

अन्य कलाओं में संगीत की आवश्यकता

वास्तुकला एवं संगीत :– वास्तुकला के लिये कहा जाता है, वह केवल भौतिकता को ही प्रदर्शित करती है। यह कहना उचित होगा कि भौतिक समृद्धि के साथ–साथ वास्तुकला लोकोत्तर जगत का भी प्रतिनिधित्व करती है। वह प्रतिमाओं का आत्मिक सौंदर्य का सहारा लेकर प्रतिमाओं का आत्मिक सौंदर्य प्रकट करती है। संगीत में स्वर–लय–ताल आदि की सूक्ष्मता को देखा जाता है। वास्तुकला में भवन की ऊँचाई, लंबाई, इमारत का आकार, शैली, सही शब्दों में वास्तुकला की सुंदरता, उसको देखने एवं स्पर्श करने की आवश्यकता होती है। संगीत के सौंदर्य को अनुभव करने के लिये इन चीजों की आवश्यकता होती है।

मूर्तिकला व संगीत :– वास्तुकला से मूर्तिकला की ओर बढ़ते हैं तो पाते हैं कि तकनीक और वास्तु, साधन के प्रयोग में थोड़ा अंतर आ जाता है। कलाकार उपलब्ध साधनों से पत्थर या मिट्टी में प्राण फूँकता है। छैनी अथवा हथौड़ी की सहायता से वह आकृति रूप प्रदान करता है। मूर्ति को जीवित रूप सा प्रदान करता है। वास्तुकला से मूर्तिकला अधिक श्रेष्ठ है, परंतु मूर्तिकला से संगीत श्रेष्ठतम कला है।

संगीत एवं चित्रकला :– चित्रकला में मानव की कुंठाओं, पूर्णताओं, संघर्षों, संवेदनाओं की अभिव्यक्ति को सर्वोपरि साधन माना गया है। चित्रकला में ब्रश, पेंट, रंग, कैनवास आदि का प्रयोग किया जाता है। चित्रकला समस्त स्थूल कलाओं में सर्वोत्तम है। यह एक अचल ललित कला है। चित्रकला में जो भाव रंगों के मिश्रण से प्रकट करते हैं, संगीत में वो भाव स्वरों से प्रकट करते हैं। संगीत के स्वरों की उपेक्षा कोई नहीं कर सकता।

काव्यकला एवं संगीत :– संगीत एवं काव्य दोनों की अभिव्यक्ति का माध्यम एवं उत्पत्ति स्थान एक है। काव्य एवं संगीत एक ही प्रवाह के स्त्रोत हैं। काव्य दीपक है तो संगीत उसकी ज्योति । काव्य देव है तो संगीत उसमें चेतना का संसार करने वाली आत्मा। काव्य की कल्पना तथा संगीत का राग अभिन्न है। काव्य में साधन शब्द और स्वर दोनों का ही उत्पत्ति स्थान नाद है। दोनों ही नादमय हैं।

संस्थाओं में संगीत शिक्षा :– संस्थागत शिक्षा में संगीत शिक्षा का उच्च स्थान होता है। विद्यार्थियों की कला शिक्षा हेतु उचित व्यवस्था एवं अच्छी संगीत शिक्षा हेतु चयन प्रक्रिया होना चाहिए ताकि अच्छे विद्यार्थी उभर कर सामने आयें और उन्हें उच्च

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

स्तरीय शिक्षा दी जा सके। कई विश्वविद्यालयों के महाविद्यालयों में कला संकाय में संगीत विषय नहीं होता है, जो भारतीय ललित कला की पहचान है। ललित कला के विषयों को अनिवार्य रूप से देश के महाविद्यालयों में लागू किया जाना चाहिए। प्रत्येक महाविद्यालय में छात्र–छात्रओं के लिए संगीत विभाग एवं अन्य ललित कला विषय के विभागों की स्थापना होना चाहिए।

अध्यापन की उचित एवं समग्र व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि संगीत विषय के अच्छे एवं तैयार विद्यार्थी बन सकें। नयी–नयी (टेक्नीकल) विधियों के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए। प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा प्राध्यापकों की नियुक्ति की जाती है। यह अच्छी बात है, लेकिन कला विषय (संगीत, चित्रकला, एवं ललित कला) की आयोजित परीक्षा नहीं की जा रही है, जो भारतीय संस्कृति की क्षति है। कई स्थानों पर संगीतकारों के पद रिक्त होते हैं, जिन्हें उच्च चयन प्रक्रिया द्वारा भरा जाना चाहिए ताकि संगीत शिक्षा को सही रूप एवं उचित स्थान मिले।

आज के इस व्यावसायिकता के दौर में जबकि उच्च शिक्षा को रोजगार से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है, ऐसे में संगीत को भी उच्च शिक्षा में रोजगार की दृष्टि से जोड़ा जाना चाहिए। इसका अध्ययन–अध्यापन व्यावसायिक दृष्टि या बेरोजगार को रोजगार दिलाने की दृष्टि से किए जाने की आवश्यकता है। मीडिया के द्वारा भी इस हेतु विशेष प्रशिक्षण दिए जाते हैं। महानगरों में संगीत सिखाने वाली अनेक संस्थाएँ हैं, किन्तु उच्च शिक्षा में इस तरह से संगीत के अध्यापन को शामिल किया जाए, जिससे छात्रों को बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़े, इससे लाभ यह होगा कि बेरोजगार को निकलते ही रोजगार मिलने की संभावनाएँ बन जाएंगी।

उच्च शिक्षा में संगीत को यदि चित्रपट संगीत की दृष्टि से भी छात्रों को प्रशिक्षित किया जाता है, तो जहां इससे रोजगार की सँभावनाएँ और अवसर के दरवाजे खुलेंगे, वहीं संगीत कला विषय में अध्ययन करने वाले छात्रों में निष्चय ही वृद्धि होगी। अभी संगीत को रूचि के आधार पर लिया जा रहा है। इस विषय को लेने वाले संख्या में कम होते हैं। इस समस्या का एकमात्र हल यही है कि जब संगीत की शिक्षा रोजगारोन्मुखी होगी तो संगीत का क्षेत्र विस्तार भी होगा। संख्या में बढ़ोत्तरी होगी। रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी।

वर्तमान में व्यवसायिक संगीत का विस्तार

वर्तमान समय में इतने वर्षो के पश्चात आज हमारे संगीत की स्थिति काफी सुधारपूर्ण एवं सही दिशा की ओर जा रही है। शासन को भी इस दिशा में प्रयास करना आवश्यक है। संगीत एक विषुद्ध मनोरंजन का साधन है। आज के समय में यह किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति बनकर नहीं रह गया है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक साधनों के द्वारा सर्वसाधारण तक अपनी पैठ जमा चुका है।

जनता एवं शासन की ओर से संगीत सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। प्रयाग, लखनऊ, बनारस, ग्वालियर, मुंबई, कोलकाता आदि शहरों में संगीत सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। इस समय देशभर में अनेक संगीत संस्थायें हैं, जो संगीत की शिक्षा दे रही हैं। प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, भातखंड़े संगीत समिति, गांधर्व महाविद्यालय ग्वालियर, म्युजिक कॉलेज कोलकाता, इसके अलावा भारत के समस्त विश्वविद्यालयों मे गायन, वादन, नृत्य में एम.ए., पीएच.डी., डी लिट्. संगीत विषय में करवाया जाता है। इधर संगीत की बहुत सी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है जिनमें संगीत कार्यलय हाथरस,संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद, जैसे प्रकाशकों द्वारा संगीत की मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

ज्ञान एवं वस्तु के अदान–प्रदान का नाम ही व्यवसाय है। वर्तमान में बेरोजगारी एक विकराल समस्या है। आर्थिक युग में व्यापार का महत्व और बढ़ जाता है। कलाकार चाहे संगीतकार हो अथवा समाजसेवी जीवनयापन संचालन हेतु कुछ न कुछ प्रवृत्ति रखना पड़ेगी। यह कथन सत्य है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संगीत के कलाकारों व कला प्रेमियों के लिये वांछित स्थान नहीं रहा। प्राचीन काल में राजा–महाराजाओं के राज्याश्रयों द्वारा कलाकारों को आर्थिक रूप से सहायता प्राप्त थी। खेद का विषय है कि केन्द्र एवं राज्य सरकारें इस ओर कोई ठोस कदम नहीं उठा रहीं, जिससे कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर सकें। शासन एवं मीडिया को चाहिये कि वह इस दिशा में सकारात्मक पहल शुरू करें, शासन एवं मीडिया अपना चैनल प्रसारित करें, जिसमें नवोदित एवं ऊर्जावान कलाकारों को अपनी कला का प्रदर्शन करने का अवसर मिले। यह कहना अतिषयोक्ति न होगी, मीडिया समाचार–पत्र एवं चैनल के माध्यम से इस कला को खासकर शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। साथ ही इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं प्रिंट मीडिया सांगीतिक गोष्ठियों को पूर्ण रूप से कवरेज करें। कलाकारों, साधकों, को भी चाहिये कि वह मीडिया को कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करें।

संगीत साधकों, कलाकारों को निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देने का प्रयत्न करना चाहिये।

1. संगीत स्वर्ग का आनंद देने वाली कला है, इसे कला के रूप में सहेजकर रखें, कलाबाजी के रूप में नहीं।
2. कलाकार अपने संगीत को इतना सरल बनावें, वह मधुर, सुंदर एवं शुद्ध बना रहे।
3. आज का रसिक श्रोता संगीत नहीं समझता। यदि उसे सुरीलापन, ताल, लय से सम्बद्धता मिले तो वह श्रोता उस उत्सव में भाग अवश्य लेगा।
4. संगीत के प्रचार–प्रसार में संगीत–सम्मेलनों का आयोजन होने लगे, अधिक से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन हो, उत्तर एवं दक्षिण भारतीय संगीतज्ञ परस्पर निकट आने लगे और राष्ट्रीय एकता में भी वृद्धि होने लगे।

इस दिशा में खासकर केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों को चाहिये कि वे अपने नियमों में शिथिलता करके प्रसारण प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया में लचीलापन लाये।

संगीत के विभिन्न क्षैत्रों में लाभ

संगीत एक तपस्या है, जिसे निःस्वार्थभाव से ही सिद्ध किया जा सकता है, किन्तु वर्तमान समय में संगीत की गहन साधना करना सभी के लिये संभव नहीं है। इसलिये मनुष्य ने संगीत के विभिन्न क्षेत्र खोज लिये हैं। संगीत का जादू ऐसा है, जिससे पशु–पक्षी ही नहीं वरन् पेड़–पौधे भी प्रभावित होते हैं। आज कई अनुसंधान इस क्षेत्र में किये जा रहे हैं तथा लोग इसी दम पर अपनी आजीविका चला रहे हैं। संगीत का चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रभाव देखा गया है। संगीत के सुरों से कई ऐसी धुनों का निर्माण किया गया है जिससे शारीरिक विकार दूर किये जा सकते हैं। मानसिक रोगों के उपचार के लिये भी "म्यूजिक थैरेपी" का इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रकार कई क्षेत्र हैं, जिनमें मनुष्य संगीत का ज्ञान प्राप्त कर अपनी योग्यता के अनुरूप जीवनयापन करने में समर्थ हो सकता है।

वर्तमान युग कम्प्यूटर और टीवी का है। आज टेलिविजन पर कई तरह के रियलिटी शो प्रसारित हो रहे हैं। फिर चाहे वह गायन के हों, नृत्य के या अन्य किसी टेलेन्ट के। इन सबमें युवा वर्ग काफी उत्साह से बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रहें हैं और अभिभावक भी प्रायः इसी कोशिश में रहते हैं कि उनकी संतान भी किसी न किसी टेलेन्ट के जरिए अपना एक मुकाम हासिल करे। वे उसे प्रोत्साहित करने में पीछे नहीं रहते। टीवी पर प्रसारित होने वो इन कार्यक्रमों के लोकप्रिय होने का कारण भी यह है कि जो युवा वर्ग इनसे अपना मुकाम हासिल करते हैं वे देश में ही नहीं, वरन् विदेशों में भी अपने हुनर के जरिए धर्नाजन करते हैं।

आज संगीत का क्षेत्र पूरी तरह व्यावसायिक रूप ले चुका है, किन्तु युवा वर्ग अथवा आने वाली पीढ़ी का यह उत्तरदायित्व है कि वह संगीत को केवल व्यवसाय के रूप में जीवनयापन के लिये न अपनायें वरन् उसे समाज व कला की उन्न्ती के लिये अपनायें तो ज्यादा श्रेयस्कर होगा।यह आवश्यक नहीं है कि वह टेलेन्ट शो के जरिए ही उसे व्यवसाय के रूप में हासिल करें। इसके अतिरिक्त भी वह संगीत को अनेक क्षेत्रों में व्यवसाय के रूप में अपना सकता है। जैसे – एक संगीत शिक्षक के रूप में, एक मंचीय कलाकार के रूप में, संगीत आलोचक के रूप में, शास्त्रकार अथवा रचनाकार के रूप में, साउंड कम्पोजर के रूप में आज कई क्षेत्र ऐसे हैं, जिसमें संगीत को माध्यम बनाकर व्यवसाय किया जा सकता है।

वर्तमान व्यावसायिक संगीत में संचार माध्यम की भूमिका

आज दृश्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है, किन्तु परिवर्तन के साथ–साथ अत्याधुनिक युग में ऐसे माध्यम भी हैं, जिनमें उन्नत तकनीक या नई प्रोद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है। उपग्रह और कम्प्यूटर प्रणाली का प्रयोग करते हुए लाखों–अरबों लोग

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

परस्पर एक दूसरे से जुडे हैं। इंटरनेट के अतिरिक्त ई–मेल, फैक्स, विडियो टैक्स्ट, टैलीटैक्स्ट, इलेक्ट्रॉनिक बुलेटिन, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के रूप हैं।

इन सभी माध्यमों का सभी क्षेत्रों में बहुलता से उपयोग हो रहा है, चाहे वह साहित्य का क्षेत्र हो या शिक्षा का। साहित्य कोई भी हो, वह अभिव्यक्ति का लिखित रूप है। लेखक अपने मनोभावों, विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना चाहता है, इसके लिए वह साहित्य की विविध विधाओं को अपनाता है। ये विधायें उपन्यास, कहानी, नाटक, लघुकथा, संस्मरण के रूप में प्रचलित हैं। जैसे जन माध्यमों का विकास हुआ वैसे ही रेडियो, टी.वी. तथा फिल्में ये माध्यम भी लोकप्रिय हुए और साहित्य की विधायें भी इन माध्यमों से आम जन तक पहुँचने लगी। कई हिन्दी महाकाव्यों का दृश्य–श्रव्य माध्यमों से सफलतापूर्वक रूपांतरण किया जा चुका है, कई साहित्यक नाटकों की प्रस्तुति भी इन माध्यमों के द्वारा की जा चुकी है।

कहने का अभिप्राय यह है कि आज मीडिया जगत सभी प्रकार के कार्यों को बखूबी अंजाम दे रहा है, यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार इन माध्यमों का सफल उपयोग करता है। ये तकनीकें, शैलियाँ अंततः मानव के हित के लिए ही हैं और सार्थक ढंग से प्रयोग ही इसकी सफलता है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर यह कि भारत में संगीत की परम्परा समृद्ध रही है। आदिकाल से आज तक इसका आकर्षण और इसकी आवश्यकता सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टिकोण से बनी हुई है, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है। यदि कुछ आवश्यकता है, तो यह कि विरासत में प्राप्त संगीत की धरोहर को और आगे बढ़ाने, और अधिक विकसित करने की है और यह कार्य उच्च शिक्षा के माध्यम से ही बेहतर तरीके से किया जा सकता है। सारांश के रूप मे कहा जा सकता है कि संगीत एक ऐसी कला है, जिसको अपनाने से कोई भी व्यक्ति जीवन में कभी दुखी नहीं हो सकता। संगीत प्राचीन काल से ही आजीविका का साधन रहा है। यदि इसे व्यवसाय के रूप में न भी अपनाया जाए तो भी 'स्वांतः–सुखाय' के लिये इससे बेहतर कोई विकल्प हो नहीं सकता।

एक समय संगीत में जरूर ऐसा आया था जब समाज में संगीत को बहुत ही हेय दृष्टि से देखा जाता था, किन्तु यह संगीत की ही शक्ति थी, जिससे वह विषम परिस्थितियों से निकलकर पुनः अपने श्रेष्ठ मुकाम पर विराजमान हुआ और आज संगीत प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। संगीत नें समाज को श्रेष्ठ परम्परा दी है, व्यवसाय दिया है, आत्म सुख दिया है और भविष्य में भी वह संगीत ही होगा, जो भारत को विकास के उन्नत मार्ग पर ले जाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

सन्दर्भ –

1. *पत्रिका–संगीत कला विहार*
2. *डॉ. रामशंकर – उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में भाा का स्थान – संजय प्रकाशन दिल्ली*
3. *डॉ. राधिका शर्मा – भारतीय शास्त्रीय संगीत को मीडिया और संस्थानों का योगदान – संजय प्रकाशन दिल्ली*
4. *भारतीय संगीत का इतिहास*
5. *पत्र–पत्रिकाओं का पाठन*
6. *सेमिनार–संगोष्ठी में रोजगार के नये क्षेत्रों, में सहभागिता*
7. *संगीत के छात्रों से वार्तालाप*